के.रि.पु.बल
शौर्यगाथाएँ
Vol.8

अद्वितीय अंजनी

सत्य घटनाओं पर आधारित

वीरता का पुलिस पदक

वरीयता क्रम में वीरता के लिए राष्ट्रपति के पुलिस पदक के बाद आने वाला वीरता का पुलिस पदक देश की आंतरिक सुरक्षा, देश हित और देश की रक्षा के लिए अपने प्राण तक न्यौछावर कर देने वाले वीर पुलिस कर्मियों को प्रदान किया जाता है। इस पदक के साथ एक मासिक-भत्ता भी प्रदान किया जाता है जो कार्मिक की सेवानिवृत्ति के बाद भी जारी रहता है तथा कार्मिक की मृत्युपरांत उसके आश्रित को भी दिया जाता है। लगातार दूसरी बार यह पदक बार-एक और इसी क्रम में पुलिस पदक बार-दो और आगे इसी क्रमिक रूप से जारी रहता है।

के.रि.पु.बल
शौर्यगाथाएँ

अद्वितीय अंजनी

CENTRAL RESERVE POLICE FORCE

प्रस्तुतिः संजय गुप्ता
लेखनः मंदार गंगेले
चित्रांकनः हेमंत कुमार
स्याहीकारः विनोद कुमार
आवरणः हेमंत कुमार एवं ईशान त्रिवेदी
रंग सज्जाः सुनील दस्तुरिया
शब्दांकनः मंदार गंगेले
संपादनः मनीष गुप्ता

Published By: Raj Comics (an imprint of Raja Pocket Books) on behalf of Directorate General C.R.P.F.

Raj Comics
330/1, Burari
Delhi-110084
www.rajcomics.com
Ph. 01127611410

Copyright © 2016 Central Reserve Police Force

Printed By: Prince Print Process

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, distributed or transmitted in any form or by any means, including photocopy, recording or other electronic or mechanical methods, without the prior written permission of the publisher- For permission requests write to the publisher addressed "Attention: Permissions Coordinator" at the address below.

Inspector General (Operations)
Central Reserve Police Force
Email: igops@crpf.gov.in

01-अक्टूबर, 2012. शाम 4 बजे।

जय हिन्द जवानों! और जितनी जल्दी हम अपना मिशन पूरा करेंगे यह जश्न बनाने का मौका हमें उतनी ही जल्दी मिलेगा!
यस, सर! हम सभी इस मिशन को जल्द से जल्द पूरा करने के लिए प्रतीक्षारत हैं, सर!
गुड!
रिपोर्ट्स के अनुसार पी.एल.जी.ए. नक्सलियों का एक दल नक्सली कमांडर रमन्ना के नेतृत्व में फिर से इस क्षेत्र में सक्रिय है!
अंजनी कुमार अपनी योजना साथी सिपाहियों को समझाते चले गए!
इस जानकारी को सत्यापित करने के लिए हमने साडो (SEARCH AND DESTROY OPERATION) ऑपरेशन की योजना बनाई है!
जानकारी के अनुसार उनके दल को आउटपल्ली और लाचेरुगुट्टा के पहाड़ी इलाके में चहलकदमी करते हुए देखा गया है। यह जगह सार्केगुड़ा बेस केम्प से लगभग पांच से छः किलोमीटर दूर उत्तर में है।
इस रेखा मानचित्र से उस जगह के वास्तविक स्वरूप का अंदाजा लगाना असंभव है इसलिए हमने उस जगह की सेटेलाईट इमेजेस के द्वारा इलाके का अव-लोकन किया है।
वह सारा इलाका पहाड़ियों और जंगल से घिरा हुआ है और उन पहाड़ियों के बीच कुछ चार सौ स्क्वायर मीटर की जगह पर उन लोगों के होने की संभावना है!
अब चूंकि हमें उनकी संख्या के बारे में स्पष्ट जानकारी हासिल नहीं हुई है इसलिए हमें पूरी तैयारी के साथ जाना होगा! इसके लिए हमने कुल 4 टीमों को इस ऑपरेशन को अंजाम देने के लिए चुना है!
टीम 5 और 6 का नेतृत्व सहायक कमाण्डेंट जसबीर सिंह जी करेंगे और टीम 13 व 15 का नेतृत्व मैं करूंगा! ऑपरेशन का आगाज कल सुबह 4 बजे सार्केगुड़ा बेस कैंप से किया जाएगा!
कल सुबह 4 बजे सार्केगुड़ा बेसकेम्प पर मुलाकात होगी! जय हिंद!

02 अक्टूबर, 2012. सुबह 4 बजे।

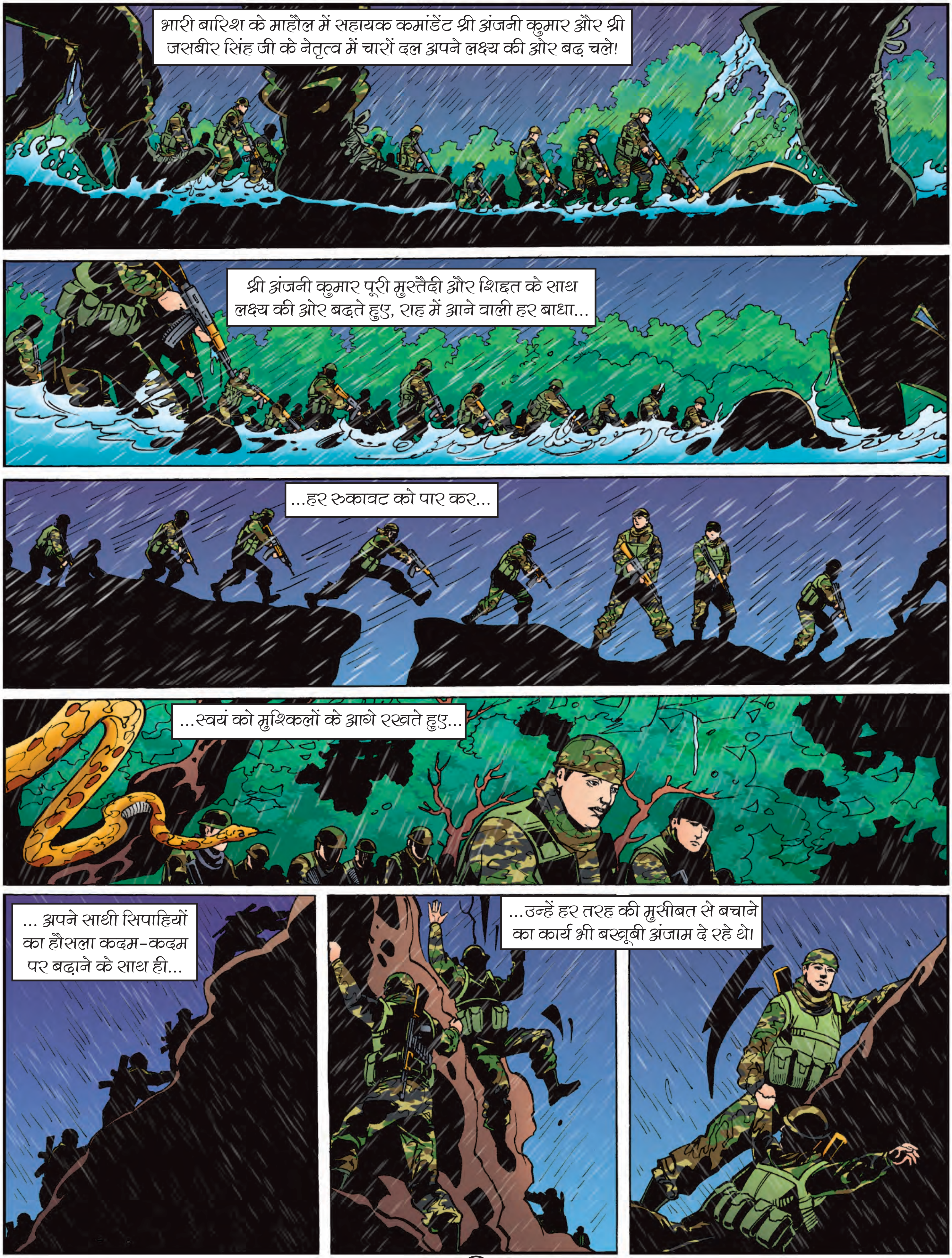
भारी बारिश के माहौल में सहायक कमांडेंट श्री अंजनी कुमार और श्री जसबीर सिंह जी के नेतृत्व में चारों दल अपने लक्ष्य की ओर बढ़ चले!
श्री अंजनी कुमार पूरी मुस्तैदी और शिद्दत के साथ लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए, राह में आने वाली हर बाधा...
...हर रुकावट को पार कर...
...स्वयं को मुश्किलों के आगे रखते हुए...
... अपने साथी सिपाहियों का हौसला कदम-कदम पर बढ़ाने के साथ ही...
...उन्हें हर तरह की मुसीबत से बचाने का कार्य भी बखूबी अंजाम दे रहे थे।

इसी के साथ समय-समय पर अपने आगे बढ़ने की दिशा को भी परख रहे थे अंजनी कुमार!
अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए बियाबान जंगल के आलावा टीम को कुछ आबादी वाले इलाकों से भी गुजरना पड़ा...
और आबादी वाले इलाके का मतलब सिर्फ गांव के रहवासी ही नहीं उनके बीच छिपे बैठे खतरे भी हो सकते हैं।
इस बात से अंजनी कुमार के साथी भलीभांति परिचित थे! और इस बारे में अंजनी जी को आगाह करना उनका प्रथम कर्तव्य था!
सर उस व्यक्ति ने हमें यहां से गुजरते हुए देख लिया है! इन स्थानीय लोगों के तार नक्सलियों से जुड़े होते हैं ऐसे में यदि नक्सलियों को हमारे ऑपरेशन के बारे में पता चल गया तो ऑपरेशन कॉम्प्रोमाईज हो सकता है!
तुम्हारी चिंता जायज है राज कुमार!
किन्तु खतरों को परखने का गुण ही अंजनी कुमार को सी.आर.पी.एफ. के अन्य जवानों से अलग बनाता था!
वह गांव वाला एक टक हमें देख रहा था जैसे हम उसके लिए उत्सुकता का विषय हों। हमारे बारे में और जानने की उसकी उत्सुकता ने ही उसे अपनी जगह से हिलने तक नहीं दिया! ऐसी उत्सुकता किसी निश्छल या निष्कपट व्यक्ति के अन्दर होती है!
अगर उस व्यक्ति के अन्दर जरा सा भी कपट होता या उसका सम्बन्ध किसी भी तरह से नक्सलियों से होता तो वह वहां रुक कर हमें देखने की जगह हमसे नजरें चुरा कर वहां से भाग कर अपने साथी नक्सलियों को सावधान करने की जल्दी में होता!
समझ गया सर!
क्या समझे?

समझ गया सर कि कम रौशनी और भारी बारिश में भी आपकी चीते सी नजरें खतरे और अपने शिकार को तुरंत भांप लेती हैं!!
और उसके बाद उसका आपसे बच पाना मुश्किल है!
हाहाहा! सही कहा राज कुमार!
लगातार चलते हुए काफी लम्बा फासला तय करने के बाद श्री अंजनी कुमार ने टीम के सभी सदस्यों को कुछ क्षण विश्राम देने का निर्णय लिया।
हमने आधे से ज्यादा फासला तय कर लिया है साथियों! पिछले 3-4 घंटों से हम लोग लगातार चल ही रहे हैं!
हम यहां पर रुक कर नाश्ता करेंगे, फिर कुछ समय आराम करके अपना कारवां आगे बढ़ाएंगे!
अब यहां से हमारा लक्ष्य ज्यादा दूर नहीं है और हम उस पॉइंट पर आ गए हैं जहां से हमारी दोनों पार्टीज को अपना मार्ग बदलना होगा! पहाड़ी से नीचे उतरने के बाद श्री जसबीर सिंह जी अपनी दोनों टीम्स के साथ पहाड़ी के पीछे वाले इलाके से दुश्मन को घेरने की कोशिश करेंगे!
चूंकि वह इलाका नक्सलियों के आने जाने का एक मात्र रास्ता है हमें उस रास्ते को बंद करना है! बाकी कि टीम्स मेरे साथ इसी रास्ते से आगे बढेंगी और लक्ष्य तक पहुंचेंगी!
किसी के मन में कोई शंका या सवाल?
कोई शंका नहीं है सर!
गुड! तो सभी नाश्ता करके विश्राम कीजिए! उसके बाद हम चलना शुरू करेंगे!
पूरी टीम ने लम्बी यात्रा के बाद कुछ क्षण विश्राम कर अल्पाहार का आनंद लिया!
विश्राम के बाद बिना कोई क्षण गवाएं कारवां पुनः अपने लक्ष्य की ओर बढ़ चला!

सुबह लगभग 11 बजकर 30 मिनट पर सी.आर.पी.एफ कोबरा टीम का वह कारवां अपनी मंजिल के करीब पहुंच गया परिस्थिति को भांप कर तुरंत ही श्री अंजनी ने अपने साथी सिपाहियों को सतर्क किया!!
हमारा सफर अपनी मंजिल तक पहुंचने को है साथियों! हमें हमारा लक्ष्य दिखाई दे रहा है!
अब यहां से हमारी मुश्किलें और जिम्मेदारी बढ़ जाती है! हमें पूरी सतर्कता के साथ दबे पांव आगे बढ़ना है! दुश्मन को हमारे यहां होने का लेश मात्र भी अंदाजा नहीं होना चाहिए!
क्योंकि हमारा सारा ओपरेशन सरप्राइज एलिमेंट पर निर्भर करता है! हमें दुश्मन के सामने पहुंच कर उसे हैरान कर देना है इस हद तक कि उसे कुछ कर पाने या सोचने समझने तक का मौका ना मिले!
अंजनी कुमार जी की टीम दबे पांव अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने लगी!
ठहरो!
वहां दिखाई दे रहे हैं हमारे दुश्मन! उस झोपड़ी में शायद कोई घिनौनी योजना बना रहे हैं!
टीम नंबर 13 आप सभी बाएं से आगे जा कर उन्हें घेरने की कोशिश कीजिए! मैं टीम नंबर 15 के साथ इन्हें दूसरी ओर से घेरने की कोशिश करता हूं!
साथ ही जसबीर सिंह जी की पार्टी को इत्तला करना होगा कि हम दुश्मन के इलाके में घुसपैठ कर चुके हैं!
श्री अंजनी कुमार ने दूसरी ओर से अपनी टीमों के साथ आ रहे श्री जसबीर सिंह को दुश्मन की स्थिति व मौजूदा परिस्थिति से अवगत कराया।
अल्फा टू चार्ली! दुश्मन नजर आ गया है! हम उसे घेरने की कोशिश कर रहे हैं! ओवर!

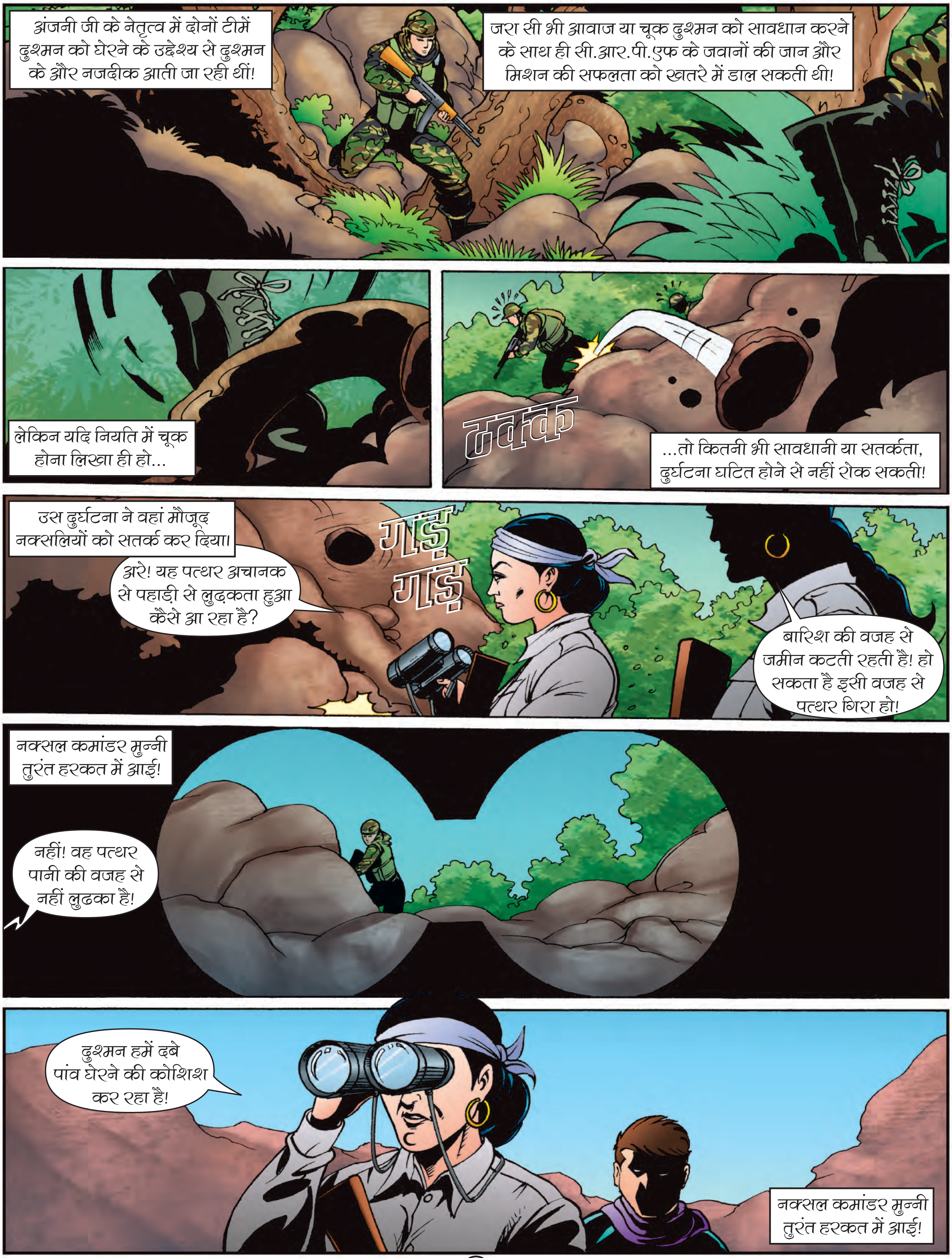

नक्सल कमांडर मुन्नी तुरंत हरकत में आई!

आओ, कुत्तों! हरामखोर सी.आर.पी.एफ. वालों, तुम लोगों की मौत तुम्हें यहां खींच कर लाइ है!
रेट रेट
और अपनी कमांडर के हरकत में आते ही हरकत में आ गए उस जगह पर मौजूद सभी नक्सली!
सी.आर.पी.एफ की टीम को इस तरह के हमले की उम्मीद नहीं थी!
लेकिन इस हमले ने सहायक कमांडेंट अंजनी कुमार की हिम्मत को पस्त करने की जगह और बढ़ा दिया।
ओह! दुश्मन को हमारे यहां होने का आभास हो गया है! लेकिन हमें इस हमले से पीछे नहीं हटना!
और अब जबकि दुश्मन को हमारे यहां होने पता चल ही गया है तो...
रेट रेट रेट रेट
...हमें भी छिपे रहने की जरूरत नहीं है! जवाबी हमला करते हुए आगे बढ़ो साथियों! हमें हर हाल में इन्हें धर दबोचना है!
अंजनी कुमार ने भी जवाबी हमला करने के आदेश दिए!
अगले ही क्षण पूरा इलाका एक युद्ध मैदान में तब्दील हो गया! दोनों ओर से बराबर फायरिंग शुरू हो गयी!
अंजनी कुमार दुश्मन को पूरी तरह घेरने का निर्णय ले चुके थे। इसके लिए उन्होंने बचाव की जगह आक्रमण का रास्ता चुना!
राजकुमार! संजय! तुम दोनों मेरे साथ आओ!
बाकी सब हमें कवर करने के लिए फायर करते रहो!
लगातार फायर के बीच जवाबी फायर करना उन लोगों के लिए आसान ना होगा!
अंजनी कुमार का सोचना सही था!
नक्सलियों के पास आधुनिक हथियारों की अनुपलब्धता उन्हें सी.आर.पी.एफ दल के सामने टिके रहने से रोक रही थी!
ओफ्फ! जितनी देर में हम लोग अपनी बंदूकों को दुबारा लोड करेंगे उतनी देर में तो सी.आर.पी.एफ. वाले हमारी लाशें बिछा देंगे!
चिंता मत करो! तुम लोग अपने-अपने हथियार लोड करो तब तक मैं उनका ध्यान बंटा कर उन्हें ठिकाने लगाती हूं!

उन्हें ठिकाने लगाने के लिए गोलियों के अलावा और भी कई साधन हैं हमारे पास!
चिट्ट्
नक्सलियों की ओर बढ़ते हुए अंजनी कुमार, राजकुमार व संजय के कुछ ही दूर वह धमाका हुआ!
लेकिन उन धमाको ने अंजनी कुमार और उनकी टीम के हौसले पस्त करने कि जगह आग में घी डालने का काम किया!
एवरीबडी चार्ज! धमाकों की वजह से उठे धूल के गुबार में वे हमें देख नहीं पाएंगे! टूट पड़ो!
यू.बी.जी.एल से दुश्मनों पर फायर करो!
सी.आर.पी.एफ. के जवानों के संगठित हमले ने नक्सलियों के बीच हड़कंप सा मचा दिया!
लगता है आई.इ.डी. के धमाके ने उनके गुस्से को भड़का दिया है!
और सी.आर.पी.एफ. के जवानों को गुस्सा दिलाने का एक ही मतलब है, तबाही!
यह बात महिला नक्सल कमांडर को भी जल्द समझ आ गयी थी कि...
आमने-सामने की लड़ाई में हमारा उनसे जीत पाना असंभव है! हमें पीछे हटना होगा!
ये ग्रेनेड उन्हें अपनी जगह रोके रखने में मदद कर सकते हैं, मैं इनसे उन्हें उलझाए रखती हूं! सभी को पीछे हटने को कहो! धान के खेत की ओर भागो!

अपनी कमांडर की आवाज ने नक्सलियों पर मानो जादू की तरह असर किया! सभी अपने साथियों को इत्तला करते हुए साथ ही लगे धान के खेत की ओर भागने लगे!
सन्नू! मंगू! ताती! सुरैया! मनिला! देबा! हूंगा! भागो!
नक्सलियों की स्थानीय भाषा भले ही अंजनी कुमार की समझ में नहीं आ रही थी लेकिन दुश्मन के इशारों से ही उनके इरादों को भांप लेने की खूबी जैसे अंजनी कुमार को वरदान में प्राप्त हुई थी!
अपनी जान की परवाह किए बगैर अंजनी कुमार नक्सलियों को रोकने के लिए उनकी ओर भागे!
वे लोग धान के खेत में छिपकर भागने की कोशिश कर रहे हैं साथियों! उन्हें रोकना होगा! आगे बढ़ो! उन्हें भागने का मौका नहीं देना है!
महिला नक्सल कमांडर भी सी.आर.पी.एफ की गोलियों से घायल हो गई।
सी.आर.पी.एफ. को रोकने का आखिरी प्रयास करते हुए महिला नक्सल कमांडर भी धान के खेत की ओर भागी!
इतनी दूर आ कर खाली हाथ जाना अंजनी कुमार को गंवारा नहीं था! महिला नक्सल के बच निकल जाने के विचार ने ही अंजनी कुमार के क्रोध को सांतवे आसमान पर पहुंचा दिया!
या!!!!!!!!!!!!!
तड़ तड़ तड़ तड़
और सी.आर.पी.एफ. के सिपाहियों के क्रोध को भड़काने का अर्थ होता है... दुश्मन की तबाही!
अंजनी कुमार की रायफल से निकली गोलियों ने नक्सल कमांडर की जीवन रेखा वहीं समाप्त कर दी!

महिला कमांडर के मारे जाने के बाद सी.आर.पी.एफ की टुकड़ी ने लगभग डेढ़ घंटे तक पूरे इलाके का बारीकी से निरिक्षण किया! लेकिन बाकी नक्सलियों का कोई सुराग हाथ नहीं लगा!
इलाके की तलाशी में सी.आर.पी.एफ. टीम ने दो भरमार रायफल, दो टिफिन बॉम्ब्स, दो ग्रेनेड्स, तीन डेटोनेटर्स, एक कारतूस का पाउच, A1.5 सेल, एक पिट्ठू और एक मेटल स्टार कॉम्बैट कैप बरामद किए!
महिला नक्सल के शव को आस-पास ही मौजूद पेड़ों की लड़की से बनाए गए स्ट्रेचर की सहायता से बेस केम्प ले जाने का फैसला किया गया!
साडो ओपरेशन सफल हो चुका था!
और इस ओपरेशन के नायक थे सहायक कमांडेंट श्री अंजनी कुमार!

समाप्त

सी.आर.पी.एफ. हेडक्वार्टर बीजापुर। दिन 12 फरवरी, 2014.

अगले दिन! 13 फरवरी, 2014.

और शुरू हो गया कोबरा टीम का वह दुष्कर अभियान!
कच्चे पथरीले रास्ते भी उनकी हिम्मत को तोड़ पाने में अक्षम थे।
घने जंगल से ज्यादा घना था कोबरा टीम के एक-एक जवान का साहस!
नदियों की गहराई भी जवानों के अंदर के हौंसले को डुबोने में सक्षम नहीं थी!
पहाड़ों से ऊंची थी उनके कदमों की ताल!
कोबरा टीम के बुलन्द हौसलों को अपनी सूझबूझ से सही दिशा देने में अंजनी कुमार ने कोई कोर कसर नहीं छोड़ी थी!

तमोड़ी गांव, थाना मंतुर, जिला बिजापुर, छत्तीसगढ़। दिन- 14 फरवरी, 2014। सुबह 4:00 बजे।

तड़ तड़ तड़ तड़
अपनी पोजिशन संभालो।
दुश्मन को हमारी मौजूदगी का आभास हो गया है।
अंजनी कुमार का इशारा समझने में अभ्यस्त उनके साथी पल भर में ही मोर्चा संभाल चुके थे।
और बिना क्षण गंवाए उन्होंने जवाबी हमला शुरू कर दिया।
तड़ तड़ तड़
इस पलटवार की नक्सलियों ने कल्पना भी न की थी!
तड़ तड़
देखते ही देखते नक्सलियों के दल ने भी मोर्चा संभाल लिया!
बहुत नाम सुना है इस अंजनी कुमार का। आज इसको इसके नाम सहित मिट्टी में मिला देंगे।
बस इनको अँधेरा होने तक रोक कर रखना है साथियों। फिर कीड़ों की तरह भून देंगे इनको।
कई घंटो तक दोनों और से कई सौ राउंड फायरिंग होने के बाद भी युद्ध का परिणाम नहीं निकल पा रहा था। दुश्मन की उन्हें वहां उलझाए रखने की चाल शीघ्र ही अंजनी कुमार की समझ में आ गई!
तन्मय! धनंजय! दुश्मन की चाल हमको अंधेरा होने तक उलझाए रखने की है ताकि हम उनके सॉफ्ट टारगेट बन सकें।

पर हमें उनके इरादे सफल होने नहीं देना है।
हमारे लिए क्या आदेश है सर?
और अंजनी कुमार ने एक मुस्कान के साथ नक्सलियों की कमर तोड़ने वाला आदेश दिया।
हमें फायर एंड मूव की तकनीक अपनानी होगी।
तन्मय भौमिक और धनन्जय दास पल भर में अंजनी कुमार का इरादा समझ गए!
राईट सर।
वी आर रेडी सर।
अंजनी कुमार की टीम अंधाधुंध फायरिंग करती और दुश्मन के जवाबी हमले से पहले सुरक्षित पोजीशन ले लेती।
ये सी.आर.पी.एफ. कोबरा वाले तो हमारी सोच से दो कदम आगे चलते हैं।
ये अगर ऐसे ही आगे बढ़ते रहें तो हमारी नाकामयाबी तय है।
बढ़ने दो सालों को आगे, लैंड माईन रूपी अपनी मौत से कुछ ही कदम दूर हैं वे।
नक्सलियों ने एक बार फिर सी.आर.पी.एफ. वालों को हल्के में लेने की भूल कर दी थी।

जिसका आभास उनको जल्दी ही तब हो गया जब कोबरा टीम की फायरिंग से उखड़ी चट्टानों के दबने से दो लैंड माइन्स में धमाके हो गए।
धड़ाम!
तड़तड़
संभल कर टूप। इन लोगों ने जगह-जगह लैंड माइंस बिछा रखी हैं। आगे बढ़ने से पहले आसपास फायरिंग करते हुए बढ़ो ताकि अगर कोई माइन हो भी तो तुम उसके निशाने पर न आ पाओ।
अंजनी कुमार ने लैंड माइन का तोड़ भी निकाल लिया था!
उफ! ये सी.आर.पी.एफ. वाले हद से ज्यादा शातिर हैं।
इनसे ऐसे पार नहीं पा सकते। इनको अलग-अलग दिशाओं से घेरो।
हैरान परेशान नक्सलियों ने अपना आखिरी दांव खेलने की कोशिश की!
तन्मय! धनंजय! हमें घेरा जा रहा है। दुश्मन हम पर मल्टीडायरेक्शनल अटैक करने की फिराक में है।
क्या ऑर्डर है सर?
अब अंजनी कुमार ने नक्सलियों को मुहतोड़ जवाब देने की ठान ली थी!
फोड़ डालो सालों को।
अंजनी कुमार के आर्डर से जैसे उनको मुंहमांगी मुराद मिल गई थी!
इसी ऑर्डर का तो इंतजार था सर।

तन्मय भौमिक और धनंजय दास ने वहां मौत का आतंक मचा दिया!
भड़ाम!
ऐसा लग रहा था जैसे धनंजय दास और तन्मय भौमिक के भीतर स्वयं यमराज आ गए हों!
नक्सली मरने और चीखने के अलावा और कुछ नहीं कर पा रहे थे!
उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि वे कोबरा प्लाटून से कैसे निपटें?
कमांडर ये सी.आर.पी.एफ. वाले तो आपकी हर चाल को काटते जा रहे हैं!
उफ! क्या करूं मैं इनका?
नक्सली अब कुछ करने की स्थिति में नहीं थे क्योंकि अंजनी कुमार ने आक्रमक रुख अपना लिया था।
यही मौका है! नक्सली तितर बितर हो चुके हैं! टूट पड़ो!
यस सर!

अंजनी कुमार और कोबरा ट्रूप लैंड माइंस और गोलाबारी की परवाह किए बिना आगे बढ़ने लगे!
ये तो आगे बढ़ते ही जा रहे हैं!
ना इनको लैंड माइंस की परवाह है और न फायरिंग की!
इन के बारे में जैसा सुना था वैसा ही पाया! फर्ज और बहादुरी की जिंदा मिसाल हैं ये सी.आर.पी.एफ. वाले!
हम इनसे नहीं जीत सकते! जान बचानी है तो भागो!
और उन्होंने वही किया!
नक्सली अपनी जान छुड़ा कर भागे!
भाग रहे हैं कायर! पकड़ो इनको एक भी बच कर न जाने पाएं!
लेकिन उन्हें भागने में सफल होने देना का अंजनी कुमार का कोई इरादा नहीं था!
अंजनी की टीम ने उनका पीछा करने की कोशिश की पर जंगल और पहाड़ी का फायदा उठाते हुए वे भागने में सफल रहे। तलाशी के दौरान उनको एक माओ का शव कुछ हथियार और अन्य वस्तुएं प्राप्त हुई।

लाश को कब्जे में कर अंजनी की टीम वापस लौटने लगी।
तन्मय! हमारी बैकअप टीम को सिग्नल दे दो। पीठ पर वार करने की इन नक्सलियों की पुरानी आदत है। ये कायर जरूर कहीं घात लगा कर छिपे बैठे होंगे।
अंजनी कुमार का अनुमान हमेशा की तरह सही था! कुछ नक्सली घात लगा कर कोबरा टीम का इंतजार कर रहे थे!
आज इनको छोड़ना नहीं है साथियों! सी.आर.पी.एफ. वालों ने हमारे एक साथी को मार गिराया है! हम उनको उसकी लाश ले जाने नहीं दे सकते!
आज ये बच कर नहीं जा पाएंगे!
कोबरा टीम के पास आते ही नक्सलियों ने उन पर फायरिंग शुरू कर दी!
तड़ तड़ तड़
पर कोबरा टीम उनके लिए पहले से तैयार थी!
तड़ तड़ तड़
सी.आर.पी.एफ. की दूसरी टूप सिग्नल मिलते ही दूसरी तरफ से धावा बोलने आ गई!
उफ्फ! इन्होनें बैकअप टीम बुला रखी है! हम इस तरह का दोहरा आक्रमण नहीं झेल सकते!

नक्सली हमारी बैकअप टीम से उलझे हुए हैं! यही मौका है हमें शव के साथ आगे निकलना चाहिए!
हमारा मिशन फेल हो गया है! सी.आर.पी.एफ. वाले हमारे साथी की लाश के साथ निकल गए! अब यहां अपनी जान गंवाने के लिए रुकने का कोई फायदा नहीं। भागो!
इस तरह अपनी सूझबूझ और बहादुरी से अंजनी कुमार और कोबरा टूप ने एक असम्भव से मिशन को सफलतापूर्वक अंजाम दिया!
इस ऑपरेशन में धनंजय दास और तन्मय भौमिक ने भी उल्लेखनीय भूमिका निभाई!
अंजनी कुमार के इस वीरतापूर्ण कारनामे के लिए उन्हें पुलिस पदक से सम्मानित किया गया। हमें गर्व है अपनी मातृभूमि पर जो अंजनी कुमार, धनंजय दास और तन्मय भौमिक जैसे शौर्य नायकों को जन्म देती है। जय हिन्द! जय भारत! वंदेमातरम!

समाप्त

अलंकरण

छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले के आउटपल्ली ग्राम में माओवादियों के दल के विरुद्ध सर्च एण्ड डिस्ट्रॉय ऑपरेशन के दौरान सी.आर.पी.एफ. कोबरा युनिट के जवानों द्वारा अतुल्य साहस और वीरता के प्रदर्शन हेतु निम्न जवानों को पुलिस पदक से अलंकृत किया गया!

पुलिस पदक से सम्मानित

श्री अंजनी कुमार
तत्कालीन रैंक : सहायक कमाण्डेंट
वर्तमान रैंक: सहायक कमाण्डेंट

श्री राजकुमार
तत्कालीन रैंक : कॉन्स्टेबल
वर्तमान रैंक: कॉन्स्टेबल

श्री संजय यादव
तत्कालीन रैंक : कॉन्स्टेबल
वर्तमान रैंक: कॉन्स्टेबल

अलंकरण

छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले के तमोड़ी ग्राम में माओवादियों के दल के विरुद्ध सर्च एण्ड डिस्ट्रॉय ऑपरेशन के दौरान सी.आर.पी.एफ. कोबरा युनिट के जवानों द्वारा अतुल्य साहस और वीरता के प्रदर्शन हेतु निम्न जवानों को पुलिस पदक से अलंकृत किया गया!

पुलिस पदक से सम्मानित

श्री अंजनी कुमार (पुलिस पदक बार एक)
तत्कालीन रैंक : सहायक कमाण्डेंट
वर्तमान रैंक: सहायक कमाण्डेंट

श्री तन्मय भौमिक
तत्कालीन रैंक : कॉन्स्टेबल
वर्तमान रैंक: कॉन्स्टेबल

श्री धनंजय दास
तत्कालीन रैंक : कॉन्स्टेबल
वर्तमान रैंक: कॉन्स्टेबल

गृह राज्य मंत्री श्री हरिभाई पार्थीभाई चौधरी, श्री अंजनी कुमार, सहायक कमाण्डेंट को पुलिस पदक से अलंकृत करते हुए।

गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह, श्री अंजनी कुमार, सहायक कमाण्डेंट का अभिनंदन करते हुए।

गृह राज्य मंत्री श्री हरिभाई पार्थीभाई चौधरी, श्री संजय यादव, कॉन्स्टेबल को पुलिस पदक से अलंकृत करते हुए।

गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह, श्री संजय यादव, कॉन्स्टेबल का अभिनंदन करते हुए।

गृह राज्य मंत्री श्री हरिभाई पार्थीभाई चौधरी, श्री राजकुमार, कॉन्स्टेबल को पुलिस पदक से अलंकृत करते हुए।

गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह, श्री राजकुमार, कॉन्स्टेबल का अभिनंदन करते हुए।

सरदार पोस्ट एक शौर्य गाथा।

9 अप्रैल को गुजरात के रण ऑफ कच्छ में वीरता साहस और रण कौशल की एक अद्वितीय मिसाल रची गई जब केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की एक छोटी सी टुकड़ी ने एक पूरी पाकिस्तानी ब्रिगेड को न केवल धूल चटा दी बल्कि उसे पराजित कर पीछे लौटने पर मजबूर कर दिया। दुनिया के युद्ध इतिहासों में दर्ज एक अनूठी शौर्य गाथा।

वीर भृगुनंदन

यह केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के प्रथम कीर्ति चक्र प्राप्त करने वाले अमर शहीद भृगुनंदन चौधरी की वीरता, साहस, बलिदान और मित्र भाव की पराकाष्ठा की कहानी है। यह कहानी है उस जवान की जो बारूदी सुरंग में अपनी दोनों टांगें गंवा देने के बावजूद माओवादियों का सामना करता रहा। यह वह स्थिति थी जब माओवादियों के हमले में उसका पूरा दल बिखर गया था और उसके साथी सिपाही का भी दाहिना बाजू बारूदी सुरंग के विस्फोट में उड़ गया था। उस स्थिति में भी उसने न केवल माओवादियों के एक बहुत बड़े दल को रोके रखा बल्कि अपने घायल साथियों की भी मदद की।

शूरवीर प्रकाश

एक शौर्य चक्र और छः पुलिस वीरता पदकों से सम्मानित देश के सर्वाधिक अलंकृत पुलिस अधिकारी प्रकाश रंजन मिश्र के हैरत अंगेज कारनामों से भरपूर एक चित्रकथा। जानिए कैसे एक वीर अधिकारी ने एक गोली जांघ में, चार गोलियां दाहिने कंधे के नीचे सीने में और एक गोली कान को छील कर निकल जाने के बावजूद, माओवादियों के विरूद्ध एक बड़े अभियान को सफलतापूर्वक अंजाम दिया।

जाँबाज इलंगो

छत्तीसगढ़ के बीजापुर में माओवादियों पर काल बन कर टूट पड़े तमिलनाडू के एक साधारण ग्रामीण परिवार से आए श्री एस. इलंगो की शौर्य गाथा जिन्हें तीन वीरता पुलिस पदकों से सम्मानित किया गया। केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के पुलिस उप-महानिरीक्षक श्री एस. इलंगो देश के उन दिलेर अधिकारियों में गिने जाते हैं जिन्होंने अपने साहस व सूझबूझ से देश में आतंकवादियों, माओवादियों और देशद्रोहियों के विरूद्ध कई बड़े अभियानों को सफलतापूर्वक अंजाम दिया है।

अयोध्या के शूरवीर

5 जुलाई, 2005 स्वचालित रायफल्स, हथगोलों और रॉकेट लाँचर्स से लैस आतंकवादियों को अयोध्या स्थित विवादित स्थल को ध्वस्त करने से रोकना किसी भी सुरक्षा बल के लिए एक दुष्कर कार्य हो सकता था, लेकिन उन आतंकवादियों और विवादित स्थल में मौजूद दर्शनार्थियों के बीच एक अभेद्य सुरक्षा दीवार बन कर खड़े हो गए केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सी.आर.पी.एफ.) की 33वीं बटालियन के 'डी' कंपनी के जवान, जिन्होंने ना केवल उन सभी आतंकवादियों को मार गिराया बल्कि यह भी सुनिश्चित किया कि विवादित स्थल और दर्शनार्थियों को लेश मात्र भी क्षति न पहुंचे!

दिलेर दिव्यांशु

नक्सलियों के बीच भय के प्रतीक श्री दिव्यांशु की शौर्य गाथा। जिन्होंने अपने बाल्यकाल में ही केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल का हिस्सा बनने का निर्णय ले लिया था। उप कमाण्डेंट श्री दिव्यांशु अपने अडिग इरादों और दृढ़ निश्चय के बल पर केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल में भर्ती हो कर कोबरा कमांडो के रूप में कई दुष्कर ऑपरेशनों को निर्भयता से अपने सफल अंजाम तक पहुंचा कर दो बार पुलिस पदक से सम्मानित हुए।

हॉट स्प्रिंग्स

21 अक्टूबर,1959-लद्दाख के हॉट स्प्रिंग्स क्षेत्र में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की एक छोटी सी टुकड़ी ने मातृभूमि की रक्षा हेतु अपने साहस और पराक्रम द्वारा चीन की सैनिक टुकड़ी से जमकर लोहा लिया। मातृभूमि की रक्षा का कर्तव्य निभाते हुए देश के 10 बहादुर जवान वीरगति को प्राप्त हुए। देश के उन वीर सपूतों के बलिदान की स्मृति में 21 अक्टूबर को देश के सभी पुलिस बलों द्वारा शहीद स्मृति दिवस के रूप में मनाया जाता है!

हाथपोखर, बिहार के एक मध्यम वर्गीय परिवार से आए केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल में वर्तमान उप कमाण्डेंट श्री अंजनी कुमार की शौर्य गाथा। श्री अंजनी कुमार ने केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की कोबरा टीम के सहायक कमाण्डेंट के रूप में अतुलनीय वीरता और अदम्य साहस का परिचय देते हुए नक्सलियों व आतंकियों के खिलाफ अनेक सफल अभियानों को अंजाम दिया, जिसके लिए उन्हें दो बार वीरता के पुलिस पदक से सम्मानित किया गया।